वर्ष १३] दिसम्बर १९२९—मार्गशीर्ष १९८६ [संख्या १२

हमारा देश

बाल-सखा के प्यारे पाठक,
एक बात पर देना ध्यान।
है वह देश हमारा प्यारा,
जिसको कहते हिन्दुस्तान॥

वही हमारी मातृ-भूमि है,
वही हमारा जन्मस्थान।

उसकी महिमा बहुत बड़ी है,
गाते हैं सब वेद पुराण ॥

सागर है पग धोता उसका,
हिमगिरि है उसका दर्बान ।
गंगा जमुना सरजू हरदम,
करती हैं उसका गुन-गान ॥

वीरप्रसविनी भूमि वही है,
नामी है उसकी सन्तान ।
ज्ञानी मानी दानी ध्यानी,
शूर वीर योद्धा विद्वान ॥

ऐसी जननी जन्म-भूमि का,
हमको है पूरा अभिमान ।
जीते जी हम नहीं सहेंगे,
अपनी माता का अपमान ॥

मातृ-भूमि की वेदी पर हम,
सब कुछ कर देंगे कुर्बान ।
कभी नहीं भूलेंगे उसको,
जब तक है इस घट में प्राण ॥

मनोरञ्जन, एम० ए०

होशियार और सियार

बालको ! तुम रोज़ स्कूल जाते हो। तुमसे कोई पूछता है कि स्कूल क्यों जाते हो, तो तुम यही कहते हो कि हम पढ़ने जाते हैं। अच्छा, मुझे यह बतलाओ कि क्या पढ़ते हो ? तुम चट कह दोगे कि हम किताबों को पढ़ते हैं। किताबों में बहुत-सी बातें रहती हैं, क्या तुम उन सब बातों को भी पढ़ने की कोशिश करते हो ? अगर तुम सच बोलते हो तो ज़रूर कहोगे कि नहीं पढ़ते। तब क्या इसे ही पढ़ना कहते हैं ?

कितने लड़के ऐसे होंगे जो जान-बूझ कर अपना समय व्यर्थ खो देते हैं। क्या किसी भी किताब में तुम्हें समय व्यर्थ खोने का उपदेश मिला है ? यदि नहीं, तो तुम्हारा पढ़ना न पढ़ना दोनों बराबर ही ठहरा। रोज़ का पाठ ज़रूर पढ़ना चाहिए। आज नहीं कल कर लेंगे कहनेवाले कुछ नहीं कर सकते, हमेशा पिछड़े ही रह जाते हैं। जो पिछड़े रह जाने की आदत डाल लेते हैं वे हमेशा पिछड़े ही रहते हैं। ऐसे लोगों को 'लेट लतीफ़' भी कहा करते हैं।

ज़रा सोचो तो सही कि अगर तुम्हारी मा कहे कि 'बेटा, आज तेवहार है, ख़ूब खा लो, आठ दिन के लिए खा लो और आठवें दिन फिर खा लेना बीच में मत खाना' तो तुम उसे क्या उत्तर दोगे ? अगर एक दिन खाना न मिले तो तुम्हारा सुन्दर-सा मुख-कमल मुरझा जाता है। तब भला आठ दिन तक नहीं खाने से तुम्हारी क्या हालत होगी ? मान लो तुम एक दिन में पाव भर खा सकते हो। आठ दिन का अन्न (दो सेर) तुम्हारे अधसेरिया या पावसेरिया पेट में कैसे समायेगा ? बहुत ठूंसठाँस के खाओगे तो पाव भर के बदले डेढ़ पाव या आध सेर। इससे अधिक तो तुम खा ही नहीं सकते और इतना ही खाओगे तो भी तुमको अजीर्ण हो जावेगा। तब चूरनवाले को खोजते फिरोगे या लंघन करना पड़ेगा। तुम्हारे पेट का यह हाल है। दूसरे

अंगों की भी वही दशा होती है। मस्तिष्क के विषय में भी यही समझो। मस्तिष्क को रोज़ जितना काम करना चाहिए उतना ज़रूर उससे कराना चाहिए। उससे पाँच दिन का काम एक दिन में हो नहीं सकता और उससे काम लिये बिना दुनिया में एक पग का भी चलना मुश्किल है। इसलिए, अपने मस्तिष्क को आलसी न बना कर परिश्रमी बनाना चाहिए। अपना आज का पाठ आज ही पढ़ना चाहिए, कल पर छोड़ना उचित नहीं।

तुम्हारे बहुत-से सहपाठी होशियार होते हैं और बहुत-से सियार। जो अपना पाठ पढ़ते तो नहीं पर गुरुजी को ठगने की कोशिश करते हैं उन्हें ही सियार समझो। पर इस तरह से ठगने से गुरुजी का तो कुछ बिगड़ता-बनता नहीं, पर चेलेजी अपने को ही चाट जाते हैं। होशियार तो आगे बढ़ जाते हैं और सियारजी पहले तो शेर बनने की कोशिश करते हैं पर बाद में शेर का शिकार ज़रूर बन जाते हैं। होशियार लड़के अपना पाठ रोज़ पढ़ते हैं और उन्हें ज़रा-सी ग़लती होने से भी बड़ी शरम मालूम होती है। सियार लड़के ग़लती करते हैं, सहपाठी हँसते हैं तो भी आप अपनी बहादुरी ही समझते हैं। हँसाने में आप बीरबल के बाबा बनने बैठते हैं। ऐसे लड़के अपनी ज़िन्दगी बरबाद करते और जन्म भर क़िस्मत का रोना रोया करते हैं, ईश्वर को अन्यायी, निठुर आदि कहते हैं। पर सच तो यह है कि जो आम का पेड़ लगाता है, उसे खाने को आम का फल मिलता है; जो बबूल का पेड़ लगाता है उसे बबूल के काँटे मिलते हैं जिनसे उसको बड़ी तकलीफ़ मिलती है। इसलिए पेड़ लगाते वक़्त फल का भी ज़रूर ख़याल कर लेना चाहिए। पीछे पछताने से कुछ हाथ नहीं लगता।

सुरेन्द्रनाथ ठाकुर, बी० ए०, विशारद

दोनों भाई
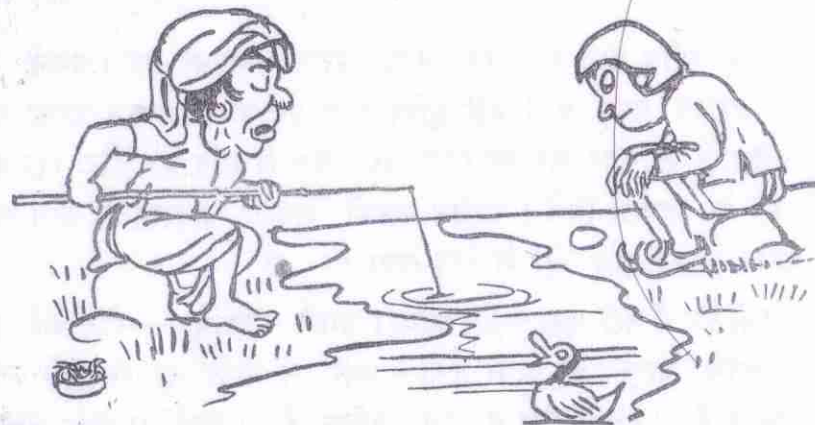
ये दोनों भाई क्या कर रहे हैं? पानी में काँटा डालकर बैठे हैं और सोच रहे हैं कि मछली फँसाने में जो मज़ा आता है वह उसके खाने में भी नहीं आता।

अरे यह क्या? एक भाई नकटा होना चाहता है, दूसरा गोता खाना चाहता है। शायद अब ये इस बात को न मानेंगे कि मछलियाँ पानी से बाहर निकलते ही मर जाती हैं।

भाग्य का पत्थर

किसी गाँव में करीम नाम का एक बहुत ग़रीब आदमी था। उसके एक दरजन बच्चे थे। बड़ी मुश्किल से वह उनका पालन करता था। एक दिन लकड़ी का गट्ठर सर पर रक्खे वह जंगल से गाँव को लौट रहा था। इतने में उसे दो बदमाश मिले। उन्होंने उसकी लकड़ी ज़बरदस्ती छीन ली। बेचारा करीम बैठकर ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।

थोड़ी देर में वहाँ एक फ़क़ीर आया। उसने कहा, बेटा—रोते क्यों हो? उठो और अपने भाग्य का पत्थर ढूँढ़ो। यहाँ से थोड़ी दूर पर इसी जंगल में एक तालाब है। उसके बीच में एक मन्दिर है। उसमें हर एक जीव के भाग्य के पत्थर रक्खे हैं। उनमें से तुम अपना पत्थर ढूँढ़ लेना।

करीम उठकर जंगल की ओर चला। रास्ते में सोने-चाँदी के थैलों से लदा हुआ उसे एक ऊँट मिला। उसने पूछा—भाई करीम, तुम कहाँ जा रहे हो। करीम ने कहा—भाग्य का पत्थर ढूँढ़ने। ऊँट ने कहा भाई साहब, ज़रा मेरे भाग्य का भी पत्थर ढूँढ़ लेना। आज १२ वर्षों से मैं इन थैलों से बड़ा परेशान हूँ। ये मेरे पीठ से अलग ही नहीं होते।

थोड़ी दूर चलकर उसे एक नदी मिली। उसमें से एक मगर ने सर निकाल कर उससे पूछा—भाई करीम तुम कहाँ जा रहे हो। करीम ने कहा—मैं अपने भाग्य का पत्थर ढूँढ़ने जा रहा हूँ। मगर ने कहा, ज़रा मेरे भाग्य का भी पत्थर देख लेना। आज १२ वर्षों से मेरे पेट में दर्द रहता है। उससे मैं दिन-रात बेचैन रहता हूँ। थोड़ी दूर चलने के बाद उसे एक सिंह मिला। उसने भी करीम से वही सवाल किया। करीम ने भी वही जवाब दिया जो उसने ऊँट और मगर को दिया था। सिंह ने कहा—मेरे पैर में काँटा गड़ गया है। उससे मैं १२ वर्षों से परेशान हूँ। ज़रा मेरे भाग्य का भी पत्थर ढूँढ़ लेना।

कई दिनों तक इधर-उधर घूमने के बाद वह एक तालाब के पास आया जिसके बीच में एक मन्दिर था। वहीं पर एक छोटी-सी नाव भी बँधी थी। उसमें चढ़ कर वह मन्दिर में पहुँचा। उसके भीतर करोड़ों पत्थर रक्खे हुए थे। वे संगमरमर के थे और उनमें कुछ लिखा न था। थोड़ी देर में जब रात हुई और चन्द्रमा की रोशनी फैलने लगी तब सब पत्थरों में अक्षर दिखलाई देने लगे। एक में उसने अपना लिखा हुआ नाम देखा। थोड़ी देर में उसने अपने नाम के नीचे देखा कि जो जो बातें उसकी ज़िन्दगी में हुई हैं वे सब उस पत्थर में लिख गई हैं। यह देखकर उसे बड़ा ताज्जुब हुआ।

उसने पत्थर को पलट कर देखा तो उसे और भी अधिक ताज्जुब हुआ। उसमें ऊँट, सिंह और मगर को मदद देने की तरकीब लिखी थी। पत्थर के एक कोने में यह भी लिखा हुआ था कि तुम बहुत जल्द धनवान् हो जाओगे। थोड़ी देर में सवेरा होगया और पत्थर जैसे पहले सादे थे वैसे सादे के सादे होगये। उनके सब अक्षर ग़ायब होगये।

सूर्य्य निकलने पर वह लौट पड़ा। इस समय उसकी तबीयत एकदम बदल गई थी। वह बड़ा ख़ुश था। पहले वह सिंह के पास पहुँचा और उसका काँटा मुँह से पकड़कर खींच लिया। सिंह बड़ा ख़ुश हुआ। वह उसे एक खोह में ले गया जहाँ जवाहिरातों का ढेर लगा हुआ था। उसने उसमें से एक गठरी भर जवाहिरात उसके हवाले किया और फिर जंगल में पहले की तरह मंगल करने लगा।

अब करीम मगर के पास पहुँचा। मगर ने पूछा—क्या आपने मेरे भाग्य का पत्थर देखा? करीम ने कहा—हाँ देखा है। तुम्हारे पेट में एक बड़ा पन्ना चला गया है। अगर तुम उसे कै करके निकाल दो तो तुम अच्छे

हो जाओगे। मगर ने वैसा ही किया। और पन्ना ज़मीन पर गिर पड़ा। उस दिन से वह बिलकुल चंगा होगया। उसने वह पन्ना करीम को दे दिया और करीम मुसकराता हुआ ऊँट के पास पहुँचा।

ऊँट ने कहा—कहो भाई करीम क्या आपने मेरे भाग्य का पत्थर देखा? करीम ने कहा—हाँ देखा है, अच्छा तुम बैठ जाओ। ऊँट बैठ गया और करीम ने उसको थैलों को खोल कर ज़मीन पर पटक दिया। ऊँट ने लम्बी साँस लेकर कहा—अरे बाप रे, १२ वर्षों के बाद आज मेरी पीठ हल्की हुई है और आज मैंने पेट भर साँस ली है। अब आप इनको मेरी पीठ पर फिर लाद दीजिए और इन्हें मैं आपके मकान पहुँचा दूँ।

सोना, चाँदी, हीरे, पन्ने लेकर जब करीम अपने घर पहुँचा तो उसके घर के लोग बड़े ख़ुश हुए और उस दिन से वे सबके सब अपने दिन आराम से बिताने लगे।

केदारनाथ गुप्त, बी० ए०

अपने लाल से

मेरे लाल, देश की नैया तुमको पार लगाना होगा।
गया मान जो भारत का, उसको फिर से लौटाना होगा॥
आयेंगे जो विघ्न, नहीं उनसे मन में घबड़ाना होगा।
हिम्मत रख कर सदा समर में, आगे पैर बढ़ाना होगा॥
कितना ही हो दुःख, किन्तु ख़ुश हो हरदम मुसकाना होगा।
अपना शीश फूल-सा बलि-वेदी पर वीर चढ़ाना होगा॥

सोहनलाल द्विवेदी

धोखेबाज़ शिकारी

जिस तरह हाथियों को पकड़ने के लिए लोग कागज़ की हथिनी बना कर खड़ी कर देते हैं और धोखे में पड़ कर हाथी फँस जाते हैं। इसी तरह हिरण, ख़रगोश, मछली तथा दूसरे दूसरे जीवों को पकड़ने के लिए भी लोग तरह तरह के धोखे करते हैं। सुनिए आज मैं लोगों की इसी तरह की एक नई धोखेबाज़ी का हाल सुनाता हूँ।

जिन्होंने हिन्दुस्तान का भूगोल पढ़ा होगा वे जानते होंगे कि सिन्ध एक सूबा है। वहाँ एक बड़ी नदी बहती है, उसका भी नाम सिन्ध है। हाँ, तो सिन्ध नदी के किनारे रहनेवाले जो लोग शिकार करते और मांस खाते हैं वे हिन्दू भी होते हैं और मुसलमान भी। ये लोग किस तरह धोखा देकर शिकार पकड़ते हैं, ज़रा चित्र देखिए और हाल पढ़िए।

ये लोग अक्सर सारस बगुलों या बतखों को पकड़ लेते हैं और उन्हें नीचे से चीर कर उनका पेट खोखला करके टोपी सी बना लेते हैं। चित्र नम्बर एक में देखिए एक बहेलिये ने इसी तरह की टोपी तैयार कर ली है। उस चिड़िया-टोपी को लगा कर ये लोग शिकार करने निकलते हैं। जंगल में जहाँ हिरण, ख़रगोश या और छोटे-मोटे जानवर या चिड़िया होती हैं थोड़ी दूर घास में बैठ जाते हैं या घुटनों के बल हो जाते हैं। फिर धीरे धीरे उस जानवर की ओर चलते हैं जिसे पकड़ना है। वह जानवर बेचारा यह नहीं जानता कि यह मेरा हत्यारा आ रहा है। वह तो समझता है एक चिड़िया आ रही है। बेधड़क चरता रहता है, उसकी ओर ध्यान से देखता भी नहीं। पकड़नेवाला पास पहुँच कर उस पर झपट्टा मार देता है तब वह जान पाता है कि मेरी जान पर आगई। दूसरे चित्र में देखिए एक ऐसा ही आदमी सिर पर चिड़िया-टोपी दिये शिकार की खोज में जा रहा है।

कहीं कहीं तो इन लोगों को बड़े निहुरे निहुरे चलना पड़ता है। ये लोग क्या करते हैं कि सिर्फ़ चिड़िया की लम्बी गर्दन रखते हैं और उसे सिर से कलँगी की तरह बाँध लेते हैं। दूर से देखनेवाले यही समझते हैं कि कोई सारस आ रहा है।
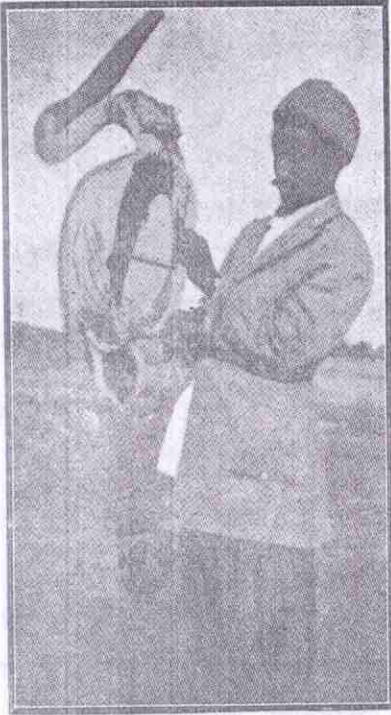
आप जानते हैं ये लोग इन्हीं चिड़ियों से इन्हीं की जाति की दूसरी चिड़ियाँ भी पकड़ लेते हैं और बड़ी आसानी से। चिड़ियाँ तो यह समझती हैं कि यह हमारा कोई भाईबन्द, मुलाकाती, साथी आ रहा है। वे निडर उत्सुकता से उससे मिलने को खड़ी रहती हैं। ये जाकर पकड़ लेते हैं।

चित्र १

चित्र २

अच्छा सुनिए, बतलाऊँ—ये लोग इन्हीं चिड़ियों से मछली कैसे पकड़ते हैं। आप समझते होंगे कि इन चिड़ियों से मछली कैसे पकड़ी जायँगी वे तो इन्हें देख कर उल्टी भाग जायँगी। अच्छा सुनिए।

चिड़िया को मारा और उसे भीतर से खोखला करके कुछ भुस वग़ैरह भर दिया। वह दूर से बिलकुल ज़िन्दा लगने लगी। अब ये लोग उसे नदी में ले गये जहाँ नावें खड़ी हैं। नाव में एक तरफ़ एक लम्बी लकड़ी बाँध दी जो जल तक जाती है फिर उसी लकड़ी पर मरी हुई चिड़िया बैठाकर उसे डोरे से बाँध दिया। नाव के दूसरी ओर जाल फैला दिया और नाव में लकड़ी के पास आकर बैठ गये। चिड़िया की परछाईं जल पर पड़ रही है। मछलियाँ समझती हैं कि कोई बगुला हमारे पकड़ने की घात लगा रहा है। कभी कभी पकड़नेवाला लकड़ी को हिला देता है तो वह चिड़िया भी हिल जाती है। मछलियाँ समझती हैं कि देखो वह उसने चोंच मारी, आगे सरका—बस बेचारी भगती हैं। नतीजा यह होता है कि दूसरी ओर जाल में फँस कर मारी जाती हैं।

कहिए, देखीं आपने सिन्ध-शिकारियों की धोखा देकर शिकार करने की अजीब अजीब तरकीबें। यह मतलबी आदमी जो न करे सो थोड़ा।

विद्याभास्कर शुक्ल

ओस

खलियानों पर क्या खेतों पर।
पेड़ों पर क्या सब पत्तों पर।
सभी जगह पर ओस पड़ी है।
यह पानी की अजब लड़ी है।

सोहनलाल द्विवेदी

विवेकानन्द

एक समय की बात है कि किसी गाँव में एक स्त्री रहती थी। उसके एक लड़का था जिसका नाम विवेकानन्द था। उसके माता-पिता ने तो उसका नाम विवेकानन्द रक्खा था। किन्तु वह था निरा बुद्धू। उसे किसी बात की रत्ती भर भी तमीज़ नहीं थी। माता-पिता उसे बहुत समझाते किन्तु उसे किसी बात का असर नहीं होता था। बेचारा उनकी बातों को भरसक मानता किन्तु वह कुछ की कुछ हो जातीं।

एक दिन उसकी मा ने उसे उसकी मौसी के घर भेजा। वहाँ उसने उसे खाने-पीने के लिए दिया। वह उसे गड़प से भूखों की भाँति हड़प कर गया। जब वह घर जाने लगा तब उसकी मौसी ने उसे मक्खन दिया और कहा कि इसे सँभाल कर घर ले जाना। विवेकानन्द ने उस मक्खन को अपनी टोपी में रख लिया और फिर टोपी को सिर पर रख कर चलता बना। दोपहर का समय था, इसलिए मक्खन पिघल गया और उसके काले चेहरे पर बहने लगा और उसका काला काला चेहरा ख़ूब चमकने लगा। जब वह इस दशा में घर पहुँचा तब उसकी मा को उसे इस दशा में देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने इसका कारण पूछा। विवेकानन्द ने सारी बात ज्यों की त्यों कह सुनाई। यह सब बात सुनकर उसे बड़ा क्रोध आया। उसने विवेकानन्द से कहा—"क्या तुम्हें इतनी भी अक़्ल नहीं ? कहीं मक्खन को भी सिर पर रक्खा करते हैं ? इसे तो एक पत्तों के दोने में पानी भर कर रखते हैं"।

विवेकानन्द ने उत्तर दिया—"मा मुझसे बड़ी भूल हो गई है, मैं आगे को सदा इस बात को याद रक्खूँगा।

थोड़े दिनों के बाद फिर उसकी मा ने उसे उसकी मौसी के घर भेजा। इस बार मौसी ने उसे एक कुत्ते का बच्चा दिया। इस बार विवेकानन्द ने अपनी मा की बात को याद रक्खा और एक पत्तों का बड़ा-सा दोना बना कर और उसमें पानी भर कर उस कुत्ते के बच्चे को बिठा दिया और बगल में इस ज़ोर से दबाया कि उस बेचारे के घर पहुँचते पहुँचते प्राणपखेरू हवा होगये। जब वह घर पहुँचा तब उसे देखकर उसकी मा को बड़ा क्रोध आया। उसने उसे कहा—"क्या कभी कुत्ते को भी इस तरह लाते हैं,उसे तो गले में एक डोरी बाँध कर लाते हैं। देखो तुमने तो उस बेचारे ग़रीब की जान ही ले ली। मैंने तो तुम्हें मक्खन को इस तरह लाने के लिए कहा था न कि कुत्ते को ?"

विवेकानन्द को बड़ा दुःख हुआ और उसने उससे कहा कि वह आगे को कभी ऐसी ग़लती न करेगा।

कुछ काल पीछे विवेकानन्द फिर अपनी मौसी के यहाँ गया। इस बार उसने उसे एक डबल रोटी दी। पहले तो विवेकानन्द ने उसे अपनी जेब में डाल लिया। किन्तु फिर उसे अपनी मा की बात याद हो आई और उसने सोचा कि इसे रस्सी में बाँध कर ले जाना ही उचित होगा। वह रस्सी के लिए इधर-उधर झाँकने लगा। थोड़ी देर बाद उसे एक कोने में एक रस्सी का टुकड़ा नज़र आया। उसने झट उसे उठा लिया और अपनी मौसी से बिदा होकर बाहर आया। बाहर आते ही उसने उस रोटी को रस्सी में बाँध लिया और रस्सी का दूसरा सिरा पकड़ कर चलता हुआ। उसके घर पहुँचने तक सारी रोटी रेत में लिबड़ चुकी थी और नाश होगई थी। उसकी मा ने जब उसे देखा तब उसे क्रोध तो बड़ा आया पर उसने विवेकानन्द को समझाना व्यर्थ समझा और कहा—"विवेकानन्द अब से तुम कभी भी कहीं बाहर मत जाना, तुम्हें किसी बात की अक़्ल नहीं है।" बेचारा विवेकानन्द चुप रह गया।

एक दिन विवेकानन्द की मा ने कुछ कलाकन्द बनाया। बना कर उसे उसने सीढ़ियों पर रख दिया क्योंकि वहाँ धूप आ रही थी। और उसने अपने बेटे से कहा—"देखो जब ऊपर जाओ तब पैर बचा कर रखना" (अर्थात् कला-

कन्द में मत रखना) और वह आप किसी कार्य-वश बाहर चली गई। विवेकानन्द ने मन में कहा कि मा बचा कर कलाकन्द में पैर रखने के लिए कह गई है। इसलिए उसने बड़े धीरे धीरे कलाकन्द में पैर रख दिया।

जब मा बाहर से आई और उसने लड़के को कलाकन्द में खड़े पाया तब बड़ी दुखी हुई और उसने उसी दम बेचारे विवेकानन्द को घर से बाहर निकाल दिया।

कुमारी राजलक्ष्मी, खोखला

झरना

ठहरो, कहाँ भगे जाते हो,
कहाँ पास किसके जाते हो।
अपनी झर झर तान सुनाते,
पथिकों को निज नीर पिलाते।
ठहर न रस्ते में लवलेश,
कौन लिये जाते संदेश।
बाधायें कितनी आती हैं,
पर न तुझे रोके पाती हैं।
बाधाओं से भिड़ भिड़ जाना,
हटना नहीं, नहीं भय खाना।
पाठ तुम्हीं से सीखा झरना।
कर्मक्षेत्र में बढ़ कर मरना।

विष्णुदत्त मिश्र, तरङ्ग

तुम जो चाहो सीख सकते हो

उस दिन एक लड़का कहने लगा—"मैं तैरना सीखना चाहता हूँ। पर क्या करूँ, किससे सीखूँ? कोई सिखानेवाला नहीं"। बहुत से लड़के हैं जो अकसर यही शिकायत करते हैं। कोई घड़ी बनाना सीखना चाहता है, कोई संगीत सीखना चाहता है, कोई साबुन बनाना सीखना चाहता है
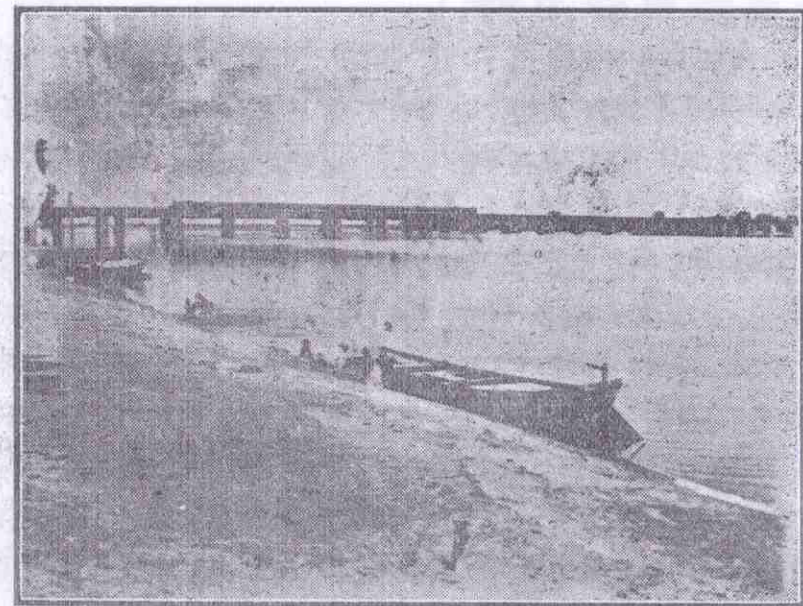
गङ्गा का पुल (कानपुर)

और कोई रेल, मोटर या हवाई जहाज़ बनाना सीखना चाहता है। पर सबके सामने यह सवाल आता है कि सिखावे कौन? किससे सीखें?

यहाँ एक बालक का हाल लिखा जाता है। इससे तुम्हें मालूम होगा कि तुम जो चाहो वह सीख सकते हो। अँगरेज़ी में एक कहावत है कि दिल

में किसी काम के करने की इच्छा होती है तो आदमी कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेता है। यहाँ जिस बालक का हाल लिखा जा रहा है उसने इस कहावत पर काम करके सफलता प्राप्त कर ली है।

इस बालक का नाम हरिश्चन्द्र शुक्ल है। यह प्रयाग के प्रसिद्ध वैद्य पंडित जगन्नाथप्रसाद शुक्ल का पुत्र है। उम्र क़रीब १७ वर्ष के होगी। इस बालक को लोग मिस्टर हरी कह कर पुकारते हैं।
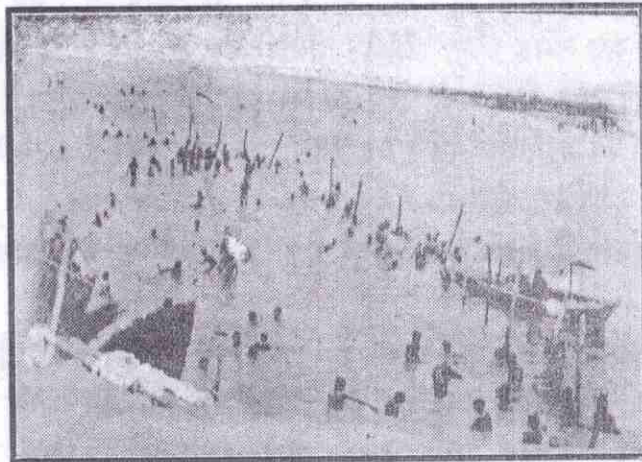
प्रयाग में गङ्गा-स्नान का एक दृश्य

मिस्टर हरी ने बहुत-सी चीज़ें अपने आप सीखी हैं। कुछ दिन हुए इन्हें फ़ोटोग्राफ़ी सीखने की इच्छा हुई। बस ये एक फ़ोटोग्राफ़र की दूकान पर गये और एक कैमरा खरीद लाये। फ़ोटोग्राफ़ी की किताबें तलाशनी शुरू कीं। इन्हें मालूम हुआ कि किताबें अँगरेज़ी में हैं। हिन्दी में नहीं। मिस्टर हरी अँगरेज़ी अभी नहीं समझ सकते। फिर भी इन्हें अँगरेज़ी में जो काग़ज़-किताबें मिलीं उन्हें इन्होंने अपने मित्रों से पढ़ाकर समझा और उसी के अनुसार काम करना शुरू किया। जो बात समझ में न आती उसे ये

फ़ोटोग्राफ़रों से पूछते फिरते। कोई कुछ बता देता कोई झिड़क देता। पर मिस्टर हरी उदास न होते। अन्त में इन्होंने चित्र खींचना सीख ही लिया। यहाँ जो चित्र दिये जा रहे हैं वे इन्हीं के खींचे हुए हैं। मिस्टर हरी को प्राकृतिक दृश्यों से बड़ा प्रेम है। इनके बाप इन्हें इतना रुपया नहीं देते कि ये जहाँ चाहें रेल का टिकट खरीद कर चले जायँ। इसलिए ये अकसर अपनी पैर-गाड़ी पर ही बैठ कर पचासों कोस चले जाते हैं और सुन्दर दृश्यों के चित्र खींच लाते हैं। इस लेख में इनके खींचे कुछ चित्रों के नमूने दिये जा रहे हैं।

पैर-गाड़ी से पचासों मील की सैर करनेवाला बालक हरिश्चन्द्र

पहला चित्र कानपुर के गङ्गातट का है। इसमें इन्होंने पुल पर जाती हुई रेल का चित्र खींचा है। दूसरा चित्र इलाहाबाद में सूर्य-ग्रहण के समय स्नान का है। तीसरे चित्र में मिस्टर हरी स्वयं कानपुर के कृषिकालेज में पैरगाड़ी चला रहे हैं। अपना यह चित्र उन्होंने एक राह चलते आदमी से खिंचवाया है।

अब ये इस कला में ख़ूब उस्ताद होगये हैं और फ़ोटोग्राफ़ी का सब सामान ख़ुद ही बनाने की बात सोच रहे हैं। दिल में कुछ सीखने की वाक़ई इच्छा हो तो सिखानेवाले तमाम मिल जाते हैं।

———

मिस्टर हरी का एक दोस्त

बदरीनाथ का वर्णन

[एक छोटी लड़की ने इस लेख में अपनी यात्रा का अच्छा वर्णन लिखा है]

हम लोग २० जून को यहाँ से चल दिये और २२ जून तक हृषीकेश रहे। सवेरे लक्ष्मण-झूले पर खाना खाया, शाम को गूलर-चट्टी पर। पहले चलने में बहुत दुःख लगा, बहुत से लोग डाँडी, झम्पान, कन्डी आदि में बैठ बैठ कर गये। पर पैदल चलने में जो आनन्द वह कहाँ। इसी प्रकार रोज़ १५ मील चलकर ठहरते। चलते चलते हम कुण-चट्टी पहुँचे। वह चट्टी बहुत ही अच्छी थी। चारों तरफ़ से चट्टी घिरी हुई ऐसी लगती थी मानों हम लोग झील में बैठे हों। रात को भगेरे ख़ूब बोले। लोग तो डर के मारे अन्दर सोये, पर हम तो बाहर ही सोये, रात वहाँ बिताकर आगे चले। चलते चलते हम देवप्रयाग पहुँचे। वहाँ पंडों की भीड़ से नाक में दम था। फ़क़ीरों की तरह कहें—"तुम कहाँ के! भाई बाबू, तुम कहाँ के!" गन्दा भी बहुत था। ख़राब जगह भी बहुत थी। हिन्दुओं के पवित्र स्थान की ऐसी बुरी दशा देखकर बहुत दुःख हुआ। बच्चों से भी पैसा लेने पर दर्शन कराये जाते थे। फिर चलते चलते हम ओखीमट पहुँचे। वहाँ पर केदारनाथ के रावल की ठहरने की जगह है पर उसकी भी गन्दगी का क्या ठिकाना। नाम बड़े और दर्शन थोड़े वाली कहावत अक्षर अक्षर सत्य है। एक बात और रह गई। वह तप्तकुण्ड का वर्णन है। वहाँ पर गर्म और ठंडे पानी के सोते हैं। वहाँ पर पंडे पैसे ले लेते हैं तब नहाने देते हैं। पर कुण्ड के नीचे इतना गन्दा है कि क़ै हो आवे। इसी बात में हमारी और पंडों की ख़ूब लड़ाई हुई। पैसे लिये बिना नहाने क्यों नहीं देते। क्या उनके दादा का बनाया हुआ है? पैसे भी लेते हो तो सफ़ाई क्यों नहीं कराते? उन्हें ख़ूब धमकाया फिर हम चलते चलते केदारनाथ पहुँचे। अब आप वहाँ के मन्दिर का हाल सुनिए।

वे लोग गहना कपड़ा लाये वह तो पंडों ने अपनी पाकेट में रख लिया बस जितना लोगों से लूटा जावे लूटो वही उनका पहला मन्त्र था। लोग जितना घी लाते वह सब मूर्त्ति के ऊपर चिपका दिया जाता। दिन के वक्त ऐसा लगता हाथ पर हाथ मारो दिखाई न देवे और क्या बताऊँ केदारनाथ में गन्दगी की तो खान थी। रास्ते में कोढ़ी बीमार बहुत मिले। मैला भी बहुत मिला। सफ़ाई की तरफ़ उनका ज़रा भी ध्यान न था। अब केदारनाथ तो ख़तम हुए। हम बदरीनाथ की तरफ़ चले। सब जगह साफ़ मिली। बीमारी का तो नाम ही न था। एक बहुत पुराना छूरा देखा। और एक बहुत पुराना कुल्हाड़ा देखा। कहते हैं यह परशुराम का है। फिर हम रुद्रप्रयाग पहुँचे वह बहुत अच्छी जगह है। मन्दिर भी बहुत अच्छा था। हम फिर जोशीमठ पहुँचे। वह बहुत साफ़ जगह है। वहाँ रावल साहब का मकान है। मठ बहुत सुन्दर है। देखने लायक़ है। एकान्त में बैठने की जगह है।

बदरीनाथ में नदियाँ बहुत हैं। बर्फ़ भी बहुत पड़ती है। नदियों के ऊपर बर्फ़ के पुल बने हुए हैं। उस पर से हम लोग ख़ूब भागते थे और बर्फ़ तोड़कर खाते थे। हमारे साथ जो कुतिया गई थी वह भी बर्फ़ ख़ूब खाती थी और बर्फ़ पर ख़ूब भागती थी। अब हम कड़ी चढ़ाई को पार करके बदरीनाथ पहुँचे। वहाँ का मन्दिर बहुत ही साफ़ और वहाँ के रावल आप ही पूजा करते हैं। मन्दिर में मूर्ति को देख कर लोग अचम्भा करते हैं। बदरीनाथ की जितनी बड़ाई करो थोड़ी है। रास्तों में हिलनेवाले पुल मिले जिसमें विष्णुगंगा का पुल सबसे अच्छा है। इसी प्रकार मेरी यात्रा पूरी हुई।

सुमतीदेवी, देहरादून

डर कोई चीज़ नहीं है !

मिस्टर हुमासन नाम के एक साहब का कहना है कि डर कोई चीज़ नहीं है। आदमी असल में डरता नहीं है। उसे लोग डराते हैं। बच्चा जब छोटा रहता है तब वह किसी से नहीं डरता। माँ-बाप और घर के लोग उसे डराते हैं। कोई कहता है रात को घर से न निकलो। कोई कहता
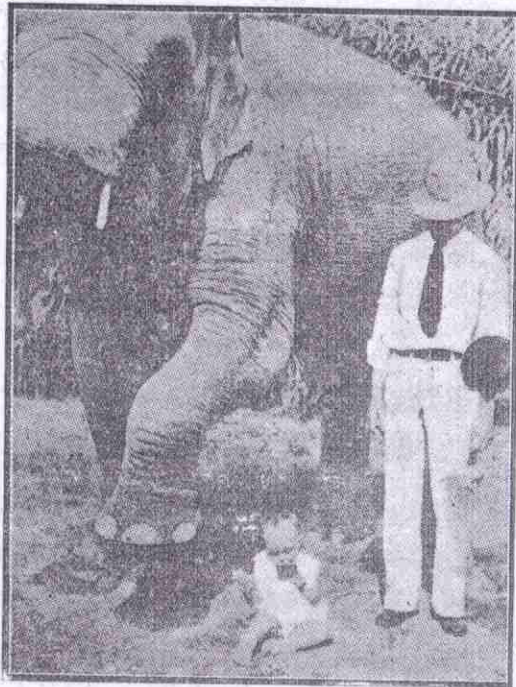
हाथी के पाँव के पास बच्चा

है साँप देखो तो भाग जाओ। कोई कहता है शेर के पास न जाओ। बस बच्चा डरने लगता है और उसकी आदत पड़ जाती है। फिर वह बड़ा हो जाता है तब भी डरता रहता है।

मिस्टर हुमासन कहते हैं कि इस प्रकार बच्चों को डराना ठीक नहीं। उन्होंने अपनी छोटी बच्ची को डरना नहीं सिखाया। वे उसे हाथी के पाँव के नीचे डाल देते हैं और उसे आइना पकड़ा देते हैं। लड़की आइने में अपना मुँह देखती रहती है और इस बात को सोचती भी नहीं कि हाथी उसे कुचल देगा।
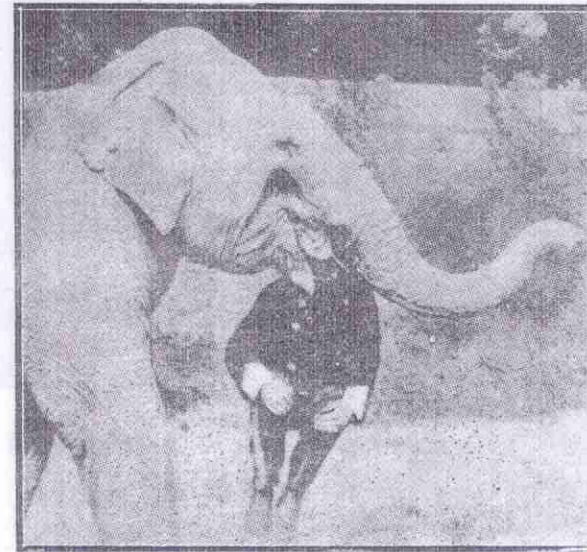
हाथी के मुँह में आदमी

एक दूसरे साहब हैं। उन्होंने एक हाथी को इस तरह सिखाया है कि हाथी अपने मुँह में उनका सिर भर लेता है और उन्हें उठा लेता है। यदि वे डरते तो ऐसा कभी न करते। एक बाज़ीगर की लड़की अपने गले में अपने से भी भारी अजगर डाल लेती है। कहते हैं साँप से कभी वह डरी ही नहीं। यदि जैसे हमारे मा-बाप हमें साँप से डराते हैं वैसे ही उसके मा-बाप उसे भी डराते तो वह अजगर को गले में डालना तो दूर उसको देखकर ही रोने

लगती। एक रूसी खिलाड़ी अपने गालों में बड़े बड़े सूजे इस तरह भोंक लेता है जैसे हम लोग मुँह में लड्डू छोड़ते हैं। सूजा भोंकते समय दर्द होता है पर

अजगर की माला

गालों में सूई

उसे डर नहीं लगता।

यदि बचपन में हमें डराया न जाय तो हम कभी किसी बात से डर नहीं सकते। जो बालक या बालिकायें यह लेख पढ़ें उनसे हमारा निवेदन है कि वे डरना छोड़ दें। डर कोई चीज़ नहीं। अपने छोटे भाई बहनों को कभी भी न डरायें। फिर जब वे बड़े होंगे तब किसी से न डरेंगे और जहाँ चाहेंगे अकेले चले जायँगे। यदि तुम निडर बनोगे तो सब काम कर सकोगे। यदि तुम डरना सीख जाओगे तो तुम कोई काम न कर पाओगे।

———

लक्ष्मीकान्त वर्मा

बिल्लो रानी

देखो मेरी बिल्लो रानी,
है फुर्तीली बड़ी सयानी।
चूहों को इससे हैरानी,
मरे दूर से उनकी नानी॥

बिल्लो रानी प्यारा नाम,
चूहे डरते करें सलाम।
पर जब घर में कुत्ता आता,
तब तो इसको खोज न पाता॥

पूँछ हिलाती भागी आती,
तब मैं इसको दूध पिलाती।
जब मैं इसको दूध पिलाऊँ,
तब करती है म्याऊँ म्याऊँ॥

मेरी बिल्ली कितनी मोटी,
जितनी छोटी उतनी खोटी।
देखो कोमल इसकी खाल,
रंग बिरंगे चिकने बाल॥

अन्धेरे में आँखें चमकें,
जैसे नभ में तारे दमकें।
कहता आँखों का चमकारा,
सिंह से मेरा भाई चारा॥

मुरलीधर आर्य्य, दीनोद-निवासी

———

समझदार कुत्ता

एक समय एक साहूकार एक बनिये की दूकान पर गया। बनिये के पास एक कुत्ता था। वह बड़ा समझदार था। ज्योंहीं साहूकार बनिये की दूकान पर पहुँचा, त्यों ही वह कुत्ता साहूकार के पैरों के पास खड़ा होकर पूँछ हिलाने लगा। यह देख कर साहूकार ने बनिये से इसका कारण पूछा। बनिया बोला कि यह कुत्ता कह रहा है, कि तुम मुझे दो पैसे दो, तो मैं तुम्हारे लिए एक सिगरेट और माचिस ला दूँ।

यह सुनकर साहूकार ने उस कुत्ते के पास दो पैसे फेंक दिये। पैसों को मुँह से उठाकर चल दिया और थोड़ी ही देर में एक सिगरेट और माचिस ले आया और साहूकार को दे दी। यह देख साहूकार बहुत ख़ुश हुआ; परन्तु कुत्ता फिर भी पूँछ हिलाता रहा।

इस पर साहूकार ने बनिये से इसका कारण पूछा। बनिये ने कहा कि यह कुत्ता कहता है, कि तुम मुझे दो आना दे दो, तो मैं अपने लिए रोटी ख़रीद लाऊँ। यह सुनकर साहूकार ने उसे फिर दो आने दे दिये। कुत्ता दो आने लेकर भाग गया, और थोड़ी ही देर में रोटी मुँह में दबा कर ले आया। कुत्ते ने रोटी साहूकार के पैरों पर रख दी, और अपनी पूँछ हिलाने लगा। साहूकार ने फिर इसका कारण पूछा। बनिये ने उत्तर दिया कि यह रोटी खाने के लिए आपसे आज्ञा माँग रहा है। साहूकार ने उसे रोटी खाने की आज्ञा दे दी।

आज्ञा पाते ही, कुत्ता मुँह में रोटी दबा कर भाग गया। बालको! देखो, वह कुत्ता कितना समझदार और आज्ञाकारी था।

विद्यार्थी रामचन्द्र अग्रवाल, जबलपुर

१—सीता दीदी

शहर बनारस में रहती हूँ।
क्लास फोर्थ में मैं पढ़ती हूँ॥
दुर्गादेवी नाम हमारा।
पढ़ना-लिखना काम हमारा॥
'थियोसफिकल' पाठशाला मेरी।
सखी सहेली पढ़ें घनेरी॥
सीता मेरी है हमजोली।
बातें करती भोली भोली॥
पर शैतानी की पुड़िया है।
सबको बेहद तंग किया है॥
एक रोज़ का सुनो हवाल।
हल करने को मिला सवाल॥
खेलने को थी छुट्टी किसको।
"पँचगोटिया" पर सूझी उसको॥

तंग किया औ खूब चिढ़ाया।
इक घूंसा दे मुझे रुलाया॥
गुरुआनी ने देखा हाल।
दिया क्लास से उसे निकाल॥
सब शैतानी भूल गई तब।
सीधी सीता दीदी है अब॥

दुर्गेश्वरीदेवी, बनारस

२—कड़ी और मुलायम रोटी

रोटी दो तरह की बनाई जाती है कड़ी और मुलायम। बहुतों को कड़ी अच्छी लगती है और बहुतों को मुलायम। बच्चों को अधिकतर कड़ी रोटी ही पसन्द है, खाने में कड़ी ही स्वादिष्ट होती है परन्तु वह बहुत हानिकारक है। उसे चाहे जितना चाबो लेकिन तब भी उसके छोटे छोटे टुकड़े पेट में पहुँच ही जाते हैं जिनसे कई तरह की पेट में बीमारियाँ होने का डर रहता है। इसलिए समझदार बच्चों को कड़ी रोटी नहीं खानी चाहिए। क़रीब आधे बालक कड़ी रोटी पसन्द करते हैं, और खाते हैं। उन सबको कड़ी रोटी न खाना चाहिए। मुलायम रोटी थोड़े चाबने से ही महीन होकर पच जाती और शरीर में ख़ून बढ़ाती है। मुलायम रोटी करने की तरकीब यह है। आटा थोड़ा ढीला माँड़ना चाहिए। रोटी चारों तरफ़ से गोल और पतली बिली हो, आग अधिक तेज़ न हो और मन्दी भी न हो। कभी तेज़ कभी मन्दी न होनी चाहिए। एक सी आग जलती रहे बीच की हो। बेलने के बाद रोटी तवे पर डालकर हाल ही पलट दो और कोयलों पर पहले उलटी करके डाल दो फिर सीधी करके। यदि रोटी में से भाप निकलने लगे तो चिमटे से पकड़ के रोको ऐसा करने से रोटी फूल जायगी और फिर उसे हाल ही खाना चाहिए। यदि देर में खानी हो तो उसे चुपड़ कर किसी गहरे बर्तन में रख दो।

सौभाग्यवती

३—चम्पा और चमेली

ये हैं चम्पा और चमेली,
साथ साथ बचपन से खेलीं।
ताता थेयी नाचा करतीं,
फूलों को हैं चुन चुन धरतीं॥
खेल खेल कर दोनों गातीं,
बातें इनकी सबको भातीं।

है परदे से जी घबराता,
ज़रा नहीं वह इन्हें सुहाता।
करतीं उठ कर बहुत सवेरे,
इधर-उधर बगिया में फेरे॥

बाल गूंथ आपस में देतीं,
पाठ याद चट पट कर लेतीं ॥
बिन्दी लाल लगातीं दोनों,
हँस हँस जी बहलातीं दोनों ॥
पढ़ने ठीक समय पर जातीं,
जी हैं उससे नहीं चुरातीं।
कपड़े सुन्दर साफ़ पहनतीं,
मैली होकर कहीं न चलतीं।
है दोनों ने बिल्ली पाली,
आधी उजली आधी काली।
म्याऊँ म्याऊँ कर वह रोती,
साथ इन्हीं दोनों के सोती ॥
पड़ती आज न मगर दिखाई,
क्या इनसे होगई लड़ाई?

शं० द० सक्सेना

४—बाल-सखा की एक लेखिका का अवसान

"बाल-सखा" के पाठकों को यह पढ़कर दुःख होगा कि उनकी प्यारी लेखिका हीरा जोशी अब इस संसार में नहीं हैं। गत ३१ अक्टोबर को आगरे में उनका देहान्त होगया। इस अवसर पर "बाल-सखा" के पाठक हीरा जोशी के बारे में बहुत कुछ जानने की इच्छा करेंगे। इसलिए नीचे उनका परिचय दिया जाता है।

श्रीमती हीरादेवी का जन्म सन् १९०५ में अल्मोड़ा में हुआ था। इनके पिता राय बहादुर पंडित बदरीदत्त जोशीजी कमायूँ के मशहूर वकील हैं। श्रीमती का लालन-पालन बड़े लाड़-प्यार से हुआ था।

बचपन में हीरादेवी ने अल्मोड़ा और नैनीताल की कन्या-पाठशालाओं में शिक्षा पाई। इनकी बुद्धि बड़ी तेज़ थी। पाठशाला में ये सदा इनाम पाया करती थीं। बुनना, सीना ये सभी बातों में निपुण थीं। इनका स्वभाव इतना मधुर था कि घरभर में सब इन्हें बहुत प्यार करते थे।

इनको कभी लालच, ईर्ष्या, द्वेष आदि अवगुणों ने छूआ तक नहीं था। इनको सफ़ाई का सदा ध्यान रहता था। घरभर को स्वच्छ रक्खा करती थीं। स्वयं अपने हाथ से कमरा साफ़ करना, कपड़े धोना, चीज़ें ठीक रखना इत्यादि इनका रोज़ का काम था।

श्रीमती हीरा जोशी अपने बच्चों के साथ

४ मार्च सन् १९१८ में हल्द्वानी में तेरह वर्ष की आयु में इनका विवाह हुआ। ब्याह के बाद इनका स्कूल जाना बन्द होगया। परन्तु घर पर ये हमेशा पढ़ती रहीं।

सन् १९२३ में इनके एक पुत्र और १९२५ में एक पुत्री हुई। ये बच्चे इन्हें बहुत प्यारे थे। इनके साथ ये बच्चों के समान ही खेला करती थीं। १९२७ में ये बीमार हुईं और तब से मरने की तारीख़ तक बीमार ही रहती थीं।
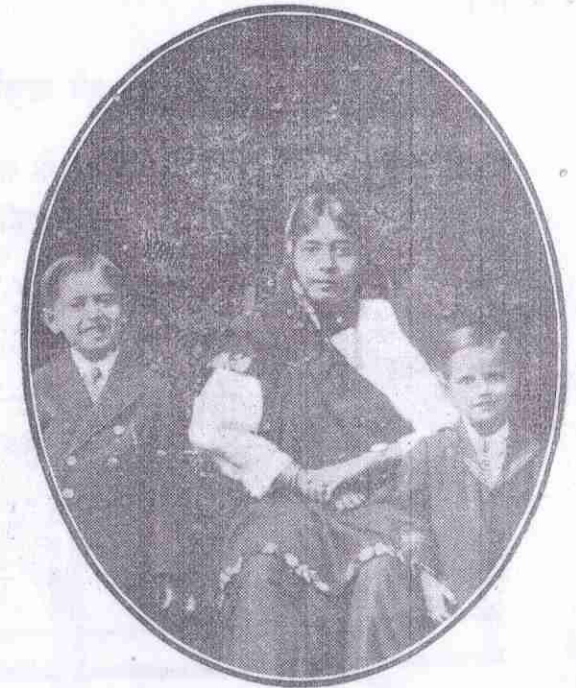
हीरा जोशी झूठे पर्दे पर कभी विश्वास नहीं करती थीं। आज-कल कमायूँ में जो ऐसे पर्दे की प्रथा कम होगई है उसके कम होने में उनका बड़ा हाथ रहा है। हमको पूर्ण आशा है कि यदि इनका स्वास्थ्य अच्छा रहता और अकाल मृत्यु न होती तो आपका देश आपसे और भी शिक्षा ग्रहण करता।

राजपती देवी

५—योरप की लड़कियाँ

उस दिन मैं अपनी तीन सहेलियों के साथ स्कूल के हाते में घूम रही थी। इसी बीच में वहाँ एक मेम और उसकी लड़की आई। हाते में जामुन
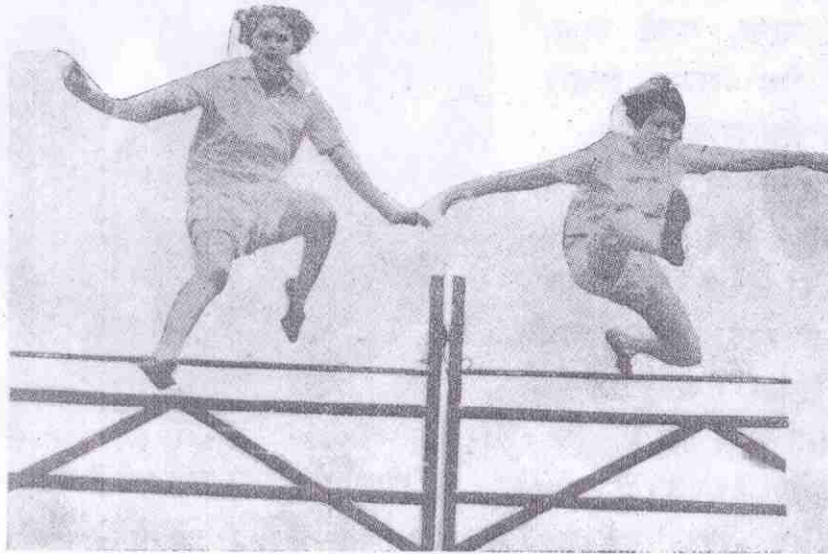
कसरती लड़कियाँ

का पेड़ था। मेम ने अपनी लड़की को पेड़ पर चढ़ा दिया। दोनों ने खूब जामुन खाई। मेरी इच्छा हुई कि मैं भी पेड़ पर चढ़ूँ और जामुन तोड़ूँ पर मेरी

सहेलियों ने कहा—"अरे पेड़ पर चढ़ोगी? कोई क्या कहेगा? लड़कियों को पेड़ पर न चढ़ना चाहिए।"

मैंने कहा—"वह भी तो लड़की ही है।"

सहेलियों ने कहा—"वह योरोपियन है उसकी नक़ल करना ठीक नहीं"।

लड़की है या तारा

मैंने कहा—"हमें सब बात की नक़ल न करनी चाहिए। पर उनमें जो अच्छी बातें हैं उन्हें छोड़ना ठीक नहीं"।

फिर मैं पेड़ पर चढ़ गई। मेरी सहेलियों ने भी कोशिश की। हम हिंदुस्तान की लड़कियाँ कसरत वग़ैरह नहीं करतीं। दौड़तीं-धूपतीं नहीं। इससे

हम कमज़ोर हो जाती हैं। शरीर का स्वास्थ्य बढ़ाने के लिए वन-बाग़ों में फिरना और कसरत करना ज़रूरी है । पर्दे में रहने से तन्दुरुस्ती नहीं बढ़ती। हमें इन बातों में योरप की लड़कियों की नक़ल करनी चाहिए और यह नक़ल क्यों है। पुराने ज़माने में यहाँ की लड़कियाँ भी तो घोड़े की सवारी करती थीं। लड़ाई के मैदान में जाती थीं और कसरत करती थीं । योरप की लड़कियाँ कसरत करने में कैसी चतुर हैं। इसका अनुमान तुम यहाँ दिये गये चित्रों से कर सकती हो । पहले चित्र में दो लड़कियाँ कूद रही हैं। ये लन्दन के एक स्कूल में पढ़ती हैं। ऊँची कूद में इन्होंने इनाम जीते हैं। दूसरे चित्र में एक लड़की एक पैर पर इस तरह खड़ी है मानों कोई तारा उदित हुआ हो। कसरत करने से इसका शरीर कैसा सुडौल होगया है।

भारतवर्ष की लड़कियाँ योरप की लड़कियों से बहुत-सी बातें सीख सकती हैं। बहुत से लोग कहते हैं कि हमें हिन्दुस्तानी की तरह रहना चाहिए। अँगरेज़ों की नक़ल न करनी चाहिए। मेमों की तरह फ़ैशन के पीछे न पड़ना चाहिए। यह ठीक है। पर इसका यह मतलब नहीं है कि मेमों में जो अच्छी बातें हैं, उन्हें भी हम न सीखें।

जयदेवी

[यहाँ पर 'बाल-सखा' के छोटे छोटे पाठकों की कहानियाँ, कविताएँ और चुटकुले प्रति मास छपा करेंगे—सं०]

एक बात जो मुझे कभी नहीं भूलती !

[जून के बाल-सखा में एक प्रश्न छपा था कि अपने जीवन की कोई ऐसी बात लिखो जो तुम्हें कभी न भूलती हो। बहुत से बालकों ने उसके उत्तर भेजे थे। नीचे उन्हीं में से कुछ चुने चुने जवाब छापे जाते हैं —सं०]

१—रेल के साथ दौड़

रात के साढ़े दस बजे थे। मैं अकेला शहर लश्कर से ग्वालियर आरहा था। रास्ता सड़क का है और उस पर होकर चैाराहा बनाती हुई रेलवे लाइन निकल गई है। उसी लाइन पर गाड़ी आरही थी, जो चैाराहे से १ फरलांग के फ़ासले पर थी। सड़क पर मैं आरहा था और चैाराहे से आध फरलांग के फ़ासले पर था। ठीक उसी वक़्त मैंने सोचा कि रेल के आने से पहले तेज़ दौड़ कर लाइन के दूसरी तरफ़ निकल जाऊँ। मैं तेज़ी से दौड़ने लगा। जब मैं चैाराहे के २० फ़ीट दूर रह गया तो गाड़ी ४० फ़ीट दूर थी। मैं झिझका। मैंने सोचा मत निकलो गाड़ी पास आचुकी है। मगर मैं न माना। जब मैं लाइन से दस फ़ीट दूर रह गया तो गाड़ी सिर्फ़ १५ फ़ीट दूर थी। मैं और तेज़ दौड़ा। जिस वक़्त मैं दोनों लाइनों के बीच में था उस वक़्त एंजिन की सर्च लाइट मेरे माथे पर पड़ रही थी और गाड़ी छः फ़ीट दूर थी। परंतु मालूम होता था कि इञ्च भर भी फ़ासिला नहीं है। आगे एक क़दम ही बढ़ा था कि ठोकर लगी और मैं सड़क पर गिर पड़ा।

परंतु लाइन से एक फ़ीट दूर मेरे पाँव थे। मैं पृथ्वी पर पड़ा था। गाड़ी धड़ाधड़ मेरे पास से जा रही थी। मैं बेहोश था। मुझे ऐसा मालूम हो रहा था कि गाड़ी मुझ पर होकर गुज़र रही है। गाड़ी निकल गई। मैं उठा। अक़्ल गुम थी पर एक आन्तरिक प्रसन्नता थी।

विनोदीलाल

२—मैंने चन्द्रमा को कैसे बचाया

मेरी आयु जब पाँच या साढ़े पाँच वर्ष की थी तब बरसात में एक रात को मैं छत पर खड़ा था। एकाएक चन्द्रमा बादलों की आड़ में आता हुआ देख कर मैं बड़े ज़ोर से चिल्लाने लगा कि "खागया खागया" इस चिल्लाहट से घर के सब लोग मेरे पास आगये। वे कई प्रकार से धीरज देकर चिल्लाने का कारण पूछने लगे। तब मैंने चन्द्रमा की तरफ़ अँगुली करके बतलाया कि उसे बादल खा रहे हैं। इस घटना से सारे घर के लोग बहुत हँसे और मुझे उसका सच्चा हाल समझाया। पर मैंने समझा कि मेरे चिल्लाने से बादल डर गये। बचपन की यह घटना मुझे आज तक याद है। हमेशा याद रहेगी।

वसन्तराव पवाँर, धार

३—पिता की याद

मुझे सदैव वह समय याद आता है जब मेरे पिताजी मरने के निकट थे और मेरी ओर देख रहे थे। उनका मुझ पर बहुत प्रेम था। थोड़ी देर में वे मर गये। अब मुझे उनकी याद बार बार आती है कि वे होते तो कितना सुख पाते।

भूपालसिंह' गुठना

४—घोड़े से मुठभेड़

मैं एक रोज़ धूल में खेल रहा था। मेरा एक साथी भी मेरे साथ था। वहाँ एक घोड़ा भी खड़ा था। मैंने सलाह की कि इस घोड़े को मारूँ। मैं पीछे खड़ा

था। मेरे साथी ने एक चाक़ू घोड़े के मारा। घोड़े ने पीछे से मेरे लात मारी। मेरे मुँह में बड़ी चोट लगी। मेरा एक दाँत टूट गया। अब जो मुझे देखता है कहने लगता है कि पाख़ाने की खुड्डी है और मुझे चिढ़ाता है। इसलिए मैं इस बात को कभी नहीं भूलता हूँ।

विन्धेश्वरीप्रसाद, लखीमपुर

५—मैं मा का कहना कैसे मानने लगा

मैं बहुधा अपनी माता से झगड़ा किया करता था, और उनकी आज्ञा पालन कभी नहीं करता था। मेरी माता मुझसे सदा दुखी रहा करती थीं और मुझे समझाया भी करती थीं परन्तु मैं उनका कहना कभी मानता नहीं था। एक बार मैं रात्रि में बिना भोजन किये बिछौने पर लेट गया। कारण यह था कि उस रोज़ मेरी माता ने पिताजी से यह शिकायत कर दी थी कि मैं उनसे सदा लड़ा करता हूँ। फलवश उस रोज़ मेरे ऊपर कुछ मार पड़ी। इसीलिए पिताजी जब उस दिन घर से कहीं चले गये तो मैं रात में माता के पास पहुँचा और पिताजी से मेरी शिकायत करने के लिए झगड़ने लगा। मेरी बातें सुनकर माताजी बहुत क्रोधित हुईं और मुझे भला बुरा कहने लगीं। मैं उसी समय रोते रोते अपने सोने के कमरे में चला गया। मैंने सोने के लिए अनेकों चेष्टायें कीं किन्तु मैं सो न सका और रोता ही रहा। अन्त में मेरी माता भी क्रोध उतर जाने के बाद मुझे मनाने आईं और खाने के लिए बहुत प्रार्थना की। परन्तु मैंने किसी का कहना न माना और सिसकता हुआ लेटा रहा। मैं सोने का बहाना किये हुए था पर मैं सोया न था। मेरी माता और बहिन मुझे सोता जान दुखित हो चली गईं। तब मैंने निःशंक होकर सोना चाहा परन्तु मैं भूख के मारे और बराबर रोते रहने से न सो सका। अन्त में जब क्षुधा असह्य होगई तो मैं रसोई में चुपके से जाने लगा तो रास्ते ही में मुझे माताजी मिल गईं। मैं शर्म करके उनके पैरों पर गिर पड़ा और हाथ

जोड़ के प्रार्थना करने लगा कि मैं सदा आपकी आज्ञा पालन करूँगा और कभी झगड़ा न करूँगा। मेरी बात सुनकर माता ने कहा, "मैं तो स्वयं ही तुम्हें मनाने के लिए आरही थी। इसी लिए मैं अभी तक सो न सकी और न खाया ही।" इसके बाद मेरी माता ने मुझे भोजन कराया।

उसी दिन से मैं सदा माता की आज्ञा का पालन करता हूँ और कभी झगड़ा नहीं करता। उसी दिन से मैं एक अच्छा बालक बन गया और सभी मेरी प्रशंसा करने लगे।

यह घटना मुझे जन्म भर न भूलेगी।

पन्नालाल जायसवाल

६—मेले की सैर

एक दिन घोड़े पर चढ़कर मैं मेला गया था। घोड़ा बिदका और मैं गिर पड़ा। मैं इसे कभी नहीं भूलता।

सन्तसिंह, गुड़गाँव

७—कटी उँगली

जब मैं ४ वर्ष की थी तब मैं अपनी ननिहाल गई। वहाँ एक कमरे में स्प्रिंगदार दरवाज़ा था। मैं और मेरे छोटे भाई बहन मिलकर उसे खींचने लगे। बीच में उन्होंने तो छोड़ दिया पर मैं उसे पकड़े ही रह गई। मेरा एक हाथ चौखट पर था। हटाने पर मेरी छोटी उँगली कट गई और फिर बहुत दिनों में अच्छी हुई। अब मैं उसे हमेशा दबाये रखती हूँ कि कोई देख न ले। इस बात की मुझे हमेशा याद रहती है।

कुमारी लक्ष्मी जोशी

———

दिसम्बर १९२९
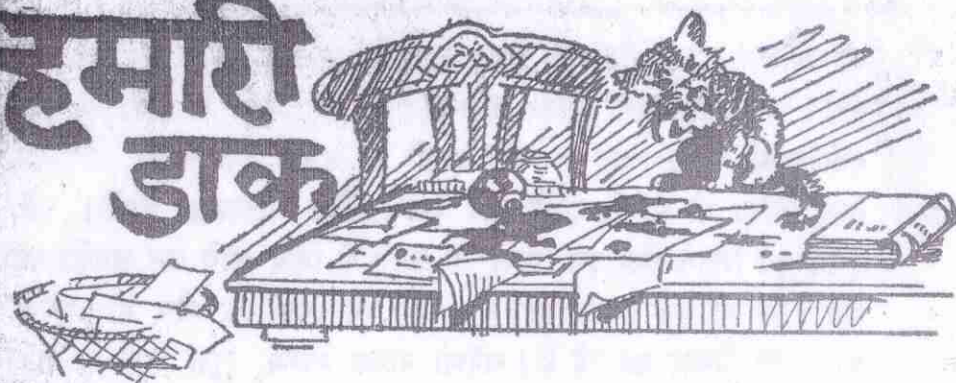
प्रिय.................................. जी,

कृपा करके 'प्रिय' और 'जी' के बीच में जो खाली जगह है, उसमें आप अपना नाम लिख लीजिए। नाम के पहले चाहे आप 'श्रीयुत' लिख लें, चाहे 'श्रीमती,' चाहे 'पण्डित,' 'ठाकुर,' या 'मिस्टर'। या इनके अलावा आपकी जो इच्छा हो लिख लें। मुझे आशा है यह चिठ्ठी लिखने में आप मेरी इतनी मदद ज़रूर करेंगे। यदि अब तक प्रतिमास आपके हाथ में बाल-सखा पहुँचता रहा है तो समझ लीजिए कि यह चिट्ठी आप ही को लिखी जा रही है। खाली जगह में आपका नाम मैंने इसलिए नहीं लिखा कि कहीं मुझसे कोई ग़लती न हो जाय और आप नाराज़ हो जायँ। जैसा कि मेरे एक दोस्त श्रीयुत व्रजेन्द्रप्रकाशजी होगये हैं। बात यह है कि शायद किसी चिट्ठी में मैंने उनका नाम व्रजेन्द्रवल्लभ लिख दिया और होना चाहिए था व्रजेन्द्रप्रकाश। मुझे याद नहीं आता कि मैंने कभी ऐसा लिखा था पर उनकी बात का मैं अविश्वास भी तो नहीं कर सकता। खैर, यह लम्बा क़िस्सा है और मुझे आज कुछ ज़रूरी बातें लिखनी हैं। इसलिए इसे यहीं छोड़ते हैं।

इस अङ्क से बाल-सखा का तेरहवाँ वर्ष समाप्त होता है। आपको यह जानकर खुशी होगी कि बाल-सखा का यह साल उसके पिछले सब सालों से अच्छा बीता। इस वर्ष हमारे छोटे पाठक-पाठिकाओं ने हमारे पास और सालों

की अपेक्षा ज़्यादा चिट्ठियाँ, लेख, चुटकुले, कवितायें और पहेलियों के उत्तर भेजे। 'बच्चों का कमरा' नामक स्तम्भ में जो लेख छपे वे प्रायः सब बालक-बालिकाओं के ही लिखे हुए थे। बच्चों का कमरा हमने ख़ास तौर से इसी लिए खोला भी था कि हमारे छोटे पाठक लेख लिखना सीखें। हमें दुःख है कि हम जितने लेख इस 'कमरे' में छपने के लिए आये उन सबको नहीं छाप सके। पर जो छपे वे कम नहीं थे। आगे हम बच्चों के और भी अधिक लेख छापने का विचार कर रहे हैं। सहेली नामक स्तम्भ खुल जाने से बालिकाओं की हम इस साल अधिक सेवा कर सके हैं। आगे हम इस स्तम्भ को और भी उपयोगी बनाने का विचार कर रहे हैं।

बाल-सखा को अच्छा बनाने में हमारे छोटे पाठकों ने हमारी बड़ी सहायता की है। बहुत से बालक-बालिकाओं ने अपने मास्टरों और बड़े भाई-बहनों आदि से लेख लिखाकर भेजे हैं। बहुतों ने सुन्दर चित्र भेजे हैं। बहुतों ने अपने साथियों में बाल-सखा का प्रचार बढ़ाया है। इस अवसर पर हम अपने सब नये-पुराने साथियों को धन्यवाद देते हैं।

जनवरी १९३० से बाल-सखा को और भी अच्छा निकालने की बात सोची जा रही है। जनवरी का अङ्क विशेषाङ्क के रूप में निकलेगा। इसमें हिन्दी के सभी नामी लेखकों के लेख और नामी कवियों की कवितायें रहेंगी। इसके अलावा इसमें और भी बहुत सी ऐसी बातें रहेंगी, जो पिछले किसी विशेषाङ्क में नहीं थीं। जनवरी से हम अपने छोटे पाठकों के लेखों के साथ उनके चित्र भी छापेंगे। इसलिए जब आप बाल-सखा के लिए लेख भेजने लगें तब अपना चित्र भी भेजें। सन् १९३० में प्रश्न-पहेलियों के उत्तर भेजने-वालों को और भी कई प्रकार के इनाम देने की बात सोची जा रही है।

आशा है नये साल से हम लोग फिर नये उत्साह से मिलेंगे। इति।

———

सम्पादक

नवम्बर मास की प्रश्न-पहेलियों के उत्तर

(१) त = १, ब = २, प = ३, ह = ४, च = ५, र = ६, ग = ७, ट = ८, क = ९। (२) प्याज़, (३) चन्द्रमा, (४) ईंट।

निम्नलिखित को एक-एक पुस्तक इनाम में दी गई :—

१—हरिश्चन्द्र राय, इलाहाबाद। २—मदनमोहन, बनारस। ३—पुरुषोत्तम महेश्वरी, बीना। ४—नन्दकिशोर तिवारी, जबलपुर। ५—ज्ञानपाल सेठिया, बीकानेर। ६—दयाराम विद्यार्थी, रायपुर। ७—हुब्बीलाल मिश्र, बरेली। ८—तपेश्वरीदेवी, नजीबाबाद। ९—गीगीबाई, कपूरथला। १०—मुरलीधर दीनोदिया, भिवानी। ११—खेताराम चौधरी, मुकुन्दगढ़। १२—रेवतीरमण श्रीवास्तव, लूमड़ा। १३—विसाहूलाल बघेलिया, धमधा। १४—रामचन्द्र अग्रवाल, जबलपुर। १५—महेशकुमार चतुर्वेदी, आगरा। १६—हरिश्चन्द्र माथुर, सुल्तानपुर। १७—विनोदीलाल, ग्वालियर। १८—राजेन्द्रसिंह, बनारस। १९—श्रीलाल शर्मा, बीकानेर। २०—मोहनीबालादेवी, देहरादून। २१—चेलालाल माहेला, चीचावतनी। २२—शान्तिस्वरूप, आज़मगढ़। २३—हुकुमचन्द जैन, उज्जैन। २४—सुधाराम साहु, घुटकू। २५—जयनारायणसिंह, कसथा। २६—परमेश्वरीलाल गुप्त, आज़मगढ़। २७—श्रीकान्त आर्य्य, धामपुर। २८—यश-पालचन्द्र, लायलपुर। २९—प्रेमलता बाई श्रीवास्तव, नागपुर। ३०—प्रमिलादेवी, नागपुर। ३१—नर्मदाप्रसाद वैश्य, जबलपुर। ३२—चम्पालाल पोद्दार, कलकत्ता। ३३—सत्येन्द्रसिंह, मोहद। ३४—हरकुमार चक्रवर्ती, बनारस। ३५—जितेन्द्रकुमार, मैनपुरी। ३६—चन्द्रबालादेवी, बरेली। ३७—शङ्करलाल, बगड़िया। ३८—सुमतीदेवी, देहरादून। ३९—श्रीकृष्णदास अग्रवाल, लश्कर। ४०—महावीरसिंह, पँवासा। ४१—विश्वनाथ विष्णु सबँटे, जबलपुर। ४२—कमल-नयन बजाज़, वर्धा। ४३—जगदीशलाल, फ़िरोज़पुर। ४४—श्रद्धानन्द मित्तल, मेरठ। ४५—श्याम-सुन्दरदास, बरेली। ४६—प्यारेलाल, आगरा। ४७—कुसुमलता, सहारनपुर। ४८—सुरेन्द्र-नारायण, मैनपुरी। ४९—कोमलचन्द्र जैन, जबलपुर। ५०—भोलानाथ टण्डन, कानपुर।

निम्नलिखित की हम प्रशंसा करते हैं। इनके उत्तर साफ़ और सावधानी से लिखे गये थे—

केशवदत्त शर्मा, बरेली। पृथ्वीराज, फरीदाबाद। नाथूलाल जैन, उज्जैन। रामलखनलाल, गया। बद्रीप्रसाद, कायस्थ। अरुण बनर्जी, विलासपुर। प्रेमप्रकाश गुप्त, लखनऊ। कुलदीप-नारायणसिंह, बनारस। वामनशङ्कर नाफड़े, छिंदवाड़ा। रामस्वरूप माथुर, जयपुर। स्वामी अघारी, बलिया। कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, गोंडा। कुमारी लक्ष्मी जोशी, बलरामपुर। इन्द्रप्रकाश हरी, लाहौर। रामनरेश, गडराना। हरेश, मुरादाबाद। कुँवर नाहरसिंह, करौली। राजकुमार

वाजपेयी, मन्धना। सूरजमल, जुगलान। नत्थीलाल अग्रवाल, भरतपुर। जगदीशचन्द्र सिंहल, अलीगढ़। पुरुषोत्तम मुकाती, धार। घनश्यामदास जालाण, बम्बई। कल्याणमल टोग्या, हाटपीपल्या। नारायणलाल जाट, नाथद्वारा। भास्करराव, मह्वाताल। टीकाराम शर्मा, तलेन। हरदयालसिंह, करेलीगञ्ज। कृष्णकुमार अरोड़ा, मुरादाबाद। गजेन्द्रकुमार सिन्हा, जमुई। दुर्गाप्रसाद दीक्षित, गुसाईंगञ्ज। रघुनीसिंह, विहटा। दुर्गाप्रसाद, कानपुर। मोतीलाल जैन, जबलपुर। गिरधारीलाल, अम्बाला। आनन्दविहारीलाल, अमरोहा। रामनारायणप्रसाद, छपरा। देवकीनन्दन, आगरा। दारोगाप्रसाद, बाँकीपुर। सावित्रीदेवी, कलकत्ता। व्रजेन्द्रप्रकाश जोशी, बरेली। विद्याभूषण शर्मा, कानपुर। आनन्दस्वरूप गोयल, मसूरी। कैलाशनाथ सेठ, कानपुर। उर्मिला पण्ड्या, लाहौर। जगन्नाथ शर्मा, रायबरेली। श्रीकृष्ण कानपुर। कृष्ण बलदेव-सहाय, बलरामपुर। आनन्दस्वरूप, बलरामपुर। श्रीनिवास रुइआ, बम्बई। कुँवर इन्द्रशरणसिंह, कटनी। मदनलाल शर्मा, जालंधर। देवी चन्द्रवती, धारुहेंडा। सिद्धेश्वरीनाथ वरियार, जमुई। वंशीधर, उज्जैन। बदरीदत्त, रानीखेत। देवीदत्त चन्दोला, गङ्गोलीहाट। सुरेन्द्रनाथ गोयल, सहारनपुर। किशनलाल, जमालपुर। वाटिकेश्वरप्रसाद गुप्त, बिसौली। इन्द्रमोहनस्वरूप, सिकन्दराबाद। देवलाल गुप्त, खैरागढ़। गङ्गाविष्णु बिरला, वसन्तकुमार बिरला, पिलानी। कुन्दनलाल वाजपेयी, कानपुर। रामकुमार वर्मा, खैरागढ़। गोविन्दराव चान्दोरकर, नरसिंहपुर। प्रमोदचन्द्र त्रिपाठी, लैन्सडौन। वैद्यनाथप्रसादसिंह, दहिला। राममिश्र चतुर्वेदी, रीवाँ। जगदीशप्रसाद गुप्त, फ़तहाबाद। महेन्द्रपाल गुप्त, बिसौली। सरलादेवी गुप्ता, मिर्ज़ापुर। मोतीलाल वि०, बुरहानपुर। अयोध्याप्रसाद गुप्त, नरसिंहपुर। महेन्द्रपाल भल्ला, मुल्तान। भँवरसिंह, मैनपुरी। विद्यावती, पिढ़दादनखान। माधवखानखोजे, बिलासपुर। छेदालाल वर्मा, फ़र्रुखाबाद। नगेन्द्रदत्त शर्मा, रायगढ़। शान्तीदेवी, गोरखपुर। रामगोपाल पाण्डेय, पथरौटा। महामायाप्रसाद, दरभंगा। चन्द्रप्रकाश, जयपुर। श्यामसुन्दर, दाहिया। हंसराज, मोगा। कैलाशनाथ सपेरटी, लखनऊ। शिवराजपती, लाहौर। चन्द्रकान्त सट्टा, महेसाना। प्रतिभाकपूर, फ़ीरोज़पुर। जीवनलाल नायक, पथरिया। भूपालसिंह, अल्मोड़ा। महावीरप्रसाद नेवटिया, फ़तेहपुर। श्यामनारायण नागू, इन्दौर। प्रकाशचन्द्र गुप्त, हिसार। बंसीधर, उज्जैन। ओंप्रकाश वधावन, लाहौर। चिरंजीलाल बल्लबगढ़। किशोरीलाल गुप्त, कानपुर। पर्वतं अप्पाराव, वीरवल्लि। अभयप्रसाद, फ़ैज़ाबाद। लक्ष्मीनारायण साहु, हाजीपुर।

लेख-सूची

चित्र-सूची

रङ्गीन चित्र

सादे चित्र

Printed and Published by K. Mittra at The Indian Press, Ltd., Allahabad.